IJAER/May- June -2022/Volume-11/Issue-3 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

"सामंतवाद और मध्यकालीन यूरोपीय समाज का एक ऐतिहासिक अध्ययन "

Dr. Harish Kumar
Assistant professor
Department of Arts
Mangalayatan University, Aligarh

सारांश–

सम्पूर्ण यूरोप में सामंतवाद का विकास सामान्यतः किन परिस्थितियों में हुआ वह निम्न तरह से स्पष्ट है रोमन राज्य के टूटने के बाद उस पर पश्चिमी यूरोप की असभ्य जातियां–लोम्बार्ड तथा गोथ इत्यादि ने अधिकार कर लिया। इन लुटेरी जातियों ने यूरोपीय समाज और सरकार को सर्वथा नवीन रूप दिया। पांचवीं शताब्दी तक रोमन राज्य अपनी रक्षा करने में असमर्थ हो चुका था। जर्मन की बर्बर जातियों के आक्रमण के कारण इटली के गांव असुरक्षित रहने लगे, क्योंकि इटली सरकार सुरक्षा करने में समर्थ न थी जिसके परिणामस्वरूप इटली की जनता ने अपनी सुरक्षा के लिए इटली के शक्तिशाली वर्ग से समझौता किया। यही शक्तिशाली वर्ग आगे चलकर सामंतवाद का आधार बने। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में भी सुरक्षा की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। उसके अनुसार ''सामंतवाद के जन्म में सुरक्षा की भावना प्रधन थी। संभावित विदेशी आक्रमण तथा सरकारी अफसरों की अनियंत्रित मांगों से छुटकारें के लिए इस समय एक ऐसी सत्ता की आवश्यकता महसूस की जा रही थी, जो उन्हें किसी भी कीमत पर सुरक्षा प्रदान कर सके।''[i]

प्रस्तावना–

सम्पूर्ण यूरोप में सामंतवाद के उदय के पीछे एक और जबरदस्त कारण यह भी रहा हैं कि राज्य के दूरस्थ विस्तार के कारण राजा अपने पूरे राज्य को सुचारू रूप से संचालन करने में असमर्थ था। इसके लिए सत्ता का विकेन्द्रीकरण हो गया जो आवश्यक कार्य होने के साथ लोकतंत्र की दिशा में एक कदम था। हेनरी एस. लूकस ने सामंतवाद के जन्म का कारण प्रशासकीय आवश्यकता मानते हुए कहा है कि ''Fedualism was government by noble fief/holders'' अन्य विचारकों ने सामंतीय प्रशासन की व्यवस्था के लिए उसके विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता को अनुभव किया है। कदम दर कदम यह

अद्भुत वर्ग जिसने पूरे यूरोप के लोगों को सुरक्षा प्रदान की, यानी यूरोपीय सामंतवाद, यूरोप में फैल गया। इसका मध्य कैरोलिंगियन क्षेत्र में था। उस समय से वे सेक्रेड रोमन क्षेत्र से होते हुए जर्मनी और डेनमार्क पहुंचे। दक्षिणी फ्रांस में, इस सामंतवाद ने स्पेन को प्रभावित किया, जिसके बाद सामंतवाद फ्रांस में अपनी संपन्न संरचना में दिखाई देता है। लगातार दक्षिणी इटली और इंग्लैंड भी इसके पूर्ण प्रभाव में आ गए। इस प्रकार यूरोप में एक और प्रकार का ढांचा दुनिया में लाया गया और इस नए ढांचे को सामंतवाद कहा गया, जिसने लगभग आठवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक पूरे यूरोप पर अपनी पूरी भव्यता से शासन किया। सम्पूर्ण यूरोप में नवीं शताब्दी से लेकर तेरहवीं शताब्दी तक कुछ परिवर्तनों के साथ मध्यकालीन सामंतवादी प्रशासकीय व्यवस्था पायी जाती है। यूरोप में सामंतवाद के संदर्भ मेंएक वर्ग इसे प्रशासकीय आवश्यकता का परिणाम मानकर चलता है। जिससे समाज में स्पष्ट विभाजक रेखा नहीं दिखाई पड़ती है। परिणाम स्वरूप इस विश्लेषण के अंतर्गत दोनों एक दूसरे का समर्थन अप्रत्यक्ष रूप से करने लगते हैं। कुछ साहित्यकार इस बात को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि ''यूरोपीय सामंतवाद रोमन और जर्मन की परम्परा से उत्पन्न स्वाभाविक तानाशाही व्यवस्था है, और वही सारे यूरोप को देन भी है।''

इसी के संदर्भ में कुछ लेखकों के संदर्भ दिया जा सकता है–''उनका राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचा भूमि अनुदानों के आधार पर गठित था और वहीढांचा कृषि दासत्व प्रथा के आधार पर। इस प्रथा के अधीन किसान भूमि से बंधे होते थे और भूमि के मालिक जमींदार होते थे जो असली काश्तकारों और राजा के बीच कड़ी का काम करते थे।[ii] डी.डी.आर. भण्डारी भी ''सामतंवाद को संवेदात्मक सरकार का एक रूप मानते है जिसमें सामंत जनता और राजा के बीच मध्यस्थता का काम करते थे। कुछ इन्हीं आधरों को फष्ट करते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार का मत है कि ''सम्पूर्ण यूरोप में सामंतवाद का सम्बन्ध दो नवीन व्यवस्थाओं से था जिनमें से एक कृषि दास व्यवस्था तथा दूसरा आधार था सैनिक संगठन।''[iii]इस आधार पर, कृषि दास और सैन्य संगठन दोनों ही सामंतवाद के मुख्य आधार हैं। इस विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामंतवाद एक ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था थी जो पूरे यूरोप में भूमि व्यवस्था से संबंधित विकेन्द्रीकरण पर आधारित थी, जिसमें सामंती सर्वोच्च सत्ता थी और किसानों के बीच का फल था, जो आपस में जुड़ा हुआ था। दोनों पक्षों को निश्चित अनुबंधों के माध्यम से और उनके सामंत राजा को खुश रखने के लिए अपने गरीब लोगों से अधिक कर वसूल करते थे।

यूरोप में राज्य सेवा करने के पुरस्कार स्वरूप सामंतों को भूमि दी जाती थी और उन सामंतों की प्रशासनिक देख–रेख में जितना क्षेत्र होता था, उसका पूरा राजस्व उन्हीं को प्राप्त होता था किन्तु वह अपने अधीनस्थ लोगों के प्राप्त कर में से अपने प्रभु को नियमित रूप से कुछ नजराना भेजता था। राजा अफसरों को नकद वेतन के बदले जमीन देता था। जमीन उन अन्य लोगों को भी दी जाती थी जिनको राजा पुरस्कृत करना चाहता था। इसीलिए सम्पूर्ण यूरोपीय सामंतवाद में किसानों को, जमींदारों या उन व्यक्तियों के लिए जिन्हें जमीन दे दी जाती थी और जो सामंती कहलाते थे, काम करना पड़ता था। सामंतों का कर्तव्य राजा के लिए सैनिक एकत्र करना भी एक महत्वपूर्ण कार्य था।[iv]एक साहित्यकार[v] सामंतवाद को चार विभिन्न प्रवृत्तियों का परिणाम माना है। मुख्य झुकाव एक व्यक्ति का अपने से उच्च स्तर के किसी अन्य व्यक्ति के साथ व्यक्तिगत संबंध था। अपनी सुरक्षा के दृ ष्टिकोण के अनुसार, उसने अपने से अधिक जमीनी व्यक्ति के साथ संबंध स्थापित किया, जो घर के करीब था, नागरिकता नहीं। प्रत्येक संरक्षक और उसके दास व्यक्तिगत संबंधों के दायित्व के आलोक में एक दूसरे से बंधे हुए थे। समर्थक अपने दासों को सुनिश्चित करते थे और दासों की बढ़ती संख्या के कारण उनकी एकजुटता का विस्तार हुआ।

दूसरी प्रवृत्ति मनुष्य के अधिकार, राजनैतिक स्थान तथा उसकी सामाजिक स्थिति के निर्धरण करने की प्रवृत्ति थी। यूरोपीय सामंतवाद में व्यक्ति के बाद का प्रवृति मनुष्य के अधिकारों, राजनीतिक स्थिति और आर्थिक कल्याण को तय करने की प्रवृत्ति थी। यूरोपीय सामंतवाद में, एक व्यक्ति के राजनीतिक संबंध और उसकी सामाजिक स्थिति इस बात पर निर्भर करती थी कि उसने कितनी भूमि का दावा किया था। तीसरा प्रवृति यह था कि विशाल जमींदार अपने क्षेत्रों में राजनीतिक शक्ति का अभ्यास करने लगे। यह परिवर्तन लगातार होता रहा। उन्हें यह अधिकार पूरे समय नहीं मिला, अधिकारों में कमी के कारण, जैसे–जैसे उनका बल बढ़ता गया, उन्होंने अपने जिले के महान अनुरोध के लिए अपने विशेषाधिकारों का विस्तार किया और उन्हें एक बार फिर से प्रशासित करना शुरू कर दिया। चौथा प्रवृति सामाजिक वर्गों के विभाजन की प्रवृत्ति थी, शासक या आदिम स्वामी पर निर्भर व्यक्ति अब तक यूरोप में दो प्रकार के थे। पहले वे व्यक्ति जो सैन्य प्रशासन के बदले में स्वामी या सामंतों से जुड़े थे और इसके अलावा वे व्यक्ति जो अपनी संपत्ति पर कृषि कार्य पूरा करते थे।

श्री एच. एस. डेवीस ने यूरोपीय सामतंवाद के स्वरूप को निर्धारित करते हुए इसकी मौलिक प्रवृत्तियों का विश्लेशण करते हुए यह कहा है कि ''सामंतीय व्यवस्था के अंतर्गत व्यक्ति सुरक्षा के दृष्टिकोण से अपने मालिक से अनुबंध्ति होता था कि वह अपने सामंती प्रभुत से पृथक् अपनी स्वतंत्र सत्ता की घोषणा नहीं कर सकता था। युद्ध सामंती व्यवस्था का प्रमुख सिद्धान्ता था। भाई–भाई के विरूद्ध और पुत्र पिता के विरूद्ध लड़ने में कोई संकोच नहीं करता था। इस समय सम्पूर्ण यूरोप में निम्न वर्ग की दशा भी अत्यन्त शोचनीय थी।''[vi] प्रस्तुत दृष्टिकोण में व्यक्ति की सुरक्षा की भावना पर अधिक बल दिया गया है एवं सामंती सम्बन्धों तथा अनुबन्धों की दृढ़ता की ओर संकेत किया गया है जिस प्रभु से व्यक्ति लाभान्वित होता था, उसके प्रति अपने स्वामी भक्ति का प्रदर्शन करना पड़ता था। इस सामंतीय व्यवस्था में व्यक्ति की निजी स्वतंत्रता समाप्त हो जाती थी। हेनी एस. ल्यूकस के अनुसार ''सामंती संगठन में सामंत को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। प्रत्येक सामंती राजकुमार के अधीन अनेक वेसोल्स होते थे, जो उसे अपनी सलाह तथा युद्ध से सहायता देने के लिए प्रतिबंधित रहते थे।''[vii]

श्री ल्यूकस के मतानुसार राजा और सामंत इन दोनों की पारस्पारिक अनुबंधता सिद्ध होती है, जिसका आधार पारस्पारिक आदान–प्रदान था। अधिकतर सामंत राजा को सैनिक सहायता प्रदान करता थे, राजा को महत्वपूर्ण परामर्श देकर राजा की मंत्राणा प्राप्त करने का अधिकारी था। बेवसटर महोदय ने अपने कोश में सामंतवाद के स्वरूप में प्रकाश डालते हुए लिखा है कि ''यह एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था थी जो राजा और सामंत के भूमि से सम्बन्धित पारस्पारिक सम्बन्धों पर आधरित थी तथा जिसमें भूमि प्राप्त कर्ता द्वारा सेवा और आदर–भावना स्वामित्व, सहायता विवाह आदि की घटनाऐं प्रमुख थी।''[viii]

बेवस्टर सर ने मध्यकालीन शासक और सामंतों के बीच कई संबंधों को स्पष्ट रूप से स्पष्ट किया है, यूरोपीय आदिम सामंत शासक से भूमि प्राप्त करते थे, एक व्यापार–बंद के रूप में जिसके लिए उन्हें शासक के संबंध, प्रशासन का विस्तार करने की आवश्यकता थी। दरअसल, शादी के मामलों में भी उन्हें सामंतों का समर्थन लेने की जरूरत थी। दोनों एक–दूसरे की मदद करने के लिए सीमित थे, इस आधार पर कि स्वामी ने लगातार अपने अधीन सामंतों को संदेह के साथ देखा। चैम्बर्स इन्साक्लोपीड़िया में सामंतवाद विषयक मान्यताओं में स्वामी भक्ति और आज्ञा–पालन पर बल देते हुए लिखा गया है कि ''सामंतवाद शब्द यद्यपि समाज व्यवस्था का एक प्रकार है तथा मुख्य रूप से उस व्यक्ति सम्बन्धों की

व्याख्या करता है जो जमीन के अधिकार और व्यक्तिगत सम्पति के आधार पर एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति के प्रति अधीनता प्रकट करते है, परन्तु यह वास्तविक रहती थी या सूढी यह विचारणीय भी है तथापि यह व्यक्तिगत सम्बन्धों और नियमों की उस विशिष्ट पद्धति की ओर संकेत करती है जिसमें एक ओर सुरक्षा तथा निर्वाह है तथा दूसरी ओर सेवा तथा आज्ञा पालन है।[ix]

इस प्रकार सामंतों के भरण–पोषण और सुरक्षा की जिम्मेदारी राजा पर थी। उसी समय, सामंत की आज्ञाकारिता और सेवा के प्रति समर्पण के साथ एक अनुबंध था। गैर–अनुपालन के मामले में, राजा केवल सैद्धांतिक रूप से उससे जमीन वापस ले सकता था और उसे हटा सकता था। यह केवल प्रारंभिक सैद्धांतिक रूप था, लेकिन व्यवहार में ऐसा नहीं था। समय के साथ यह व्यवस्था बदली। जमीन पहले जीवन के लिए दी जाती थी, बाद में यह वंशानुगत अधिकार हो गया। सामंती स्वामी के वंशजों ने भी अधिग्रहीत भूमि को उन्हीं शर्तों पर प्रदान किया जो उन्हें राजा से प्राप्त हुई थी। इस प्रकार सामंती व्यवस्था वंशानुगत चलने लगी जो यूरोप और पूरी दुनिया के सामने एक नई मिसाल थी।

इस मत की पुष्टि के संदर्भ में वह विचार देखा जा सकता है। ''यूरोपीय सामंती प्रथा वंशानुगत थी। सामंत की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी उसका स्वामी बनाया जाता था, जो पहले राज्य दरबार में जाकर कुछ भेंट कर राजा के प्रति अपनी स्वामी भक्ति प्रगट किया करता था।''[ग] और सामंत अपने अधीन छोटे–छोटे जमींदारों से भेट वसूल करता था।

निष्कर्ष–

पश्चिमी सामंतवाद के बारे में पहले उल्लेख किए गए शोधकर्ताओं के दृष्टिकोण को तोड़ने पर जो मौलिक अंत निकलता है। कहीं शासक और मध्ययुगीन स्वामी के कानूनी रूप से बाध्यकारी संबंधों में पैदा हुए वैध कोण पर जोर दिया गया है, कुछ सामाजिक पक्ष पर, कुछ जगह वित्तीय पक्ष पर, हालांकि कुछ सामान्य घटक हैं जो व्यावहारिक रूप से परिप्रेक्ष्य में दिखाए जाते हैं। हर एक मास्टरमाइंड। इन सामान्य घटकों में शासक और प्रशासन द्वारा भूमि पुरस्कार और आदिम स्वामी द्वारा कर्तव्यपरायणता शामिल है। इनके साथ–साथ, यूरोपीय सामंतवाद के विचार को तय करने में कृषि अधीनता ढांचा भी एक महत्वपूर्ण घटक है। इसके तहत मजदूरों को जमीन से जोड़ा जाता था और जमीन के असली

मालिक छोटे जमींदार होते थे। जो वास्तविक कब्जाधारियों और शासक के बीच संबंध के रूप में चला गया। मजदूर भूमि के विकास के विरोध में सामंतों को उपज और क्षणिक के रूप में पट्टे का भुगतान करते थे। इस ढांचे का आधार एक स्वावलंबी अर्थव्यवस्था थी, जिसमें माल का निर्माण तलाश में खरीदने के लिए उपलब्ध नहीं था, बल्कि अनिवार्य रूप से पड़ोस के पशुपालकों और उनके मालिकों के उपयोग के लिए उपलब्ध था।

इस प्रकार राजा द्वारा सामंत को और सामंत द्वारा अपने से नीचे जमीदारों को भूमि प्रदान करना वंशानुगत हो गया और यूरोपीय सामंतवाद के एक नये स्तर अर्थात् उपसामंतवाद का भी यूरोप में जन्म होने लगा। इस समय यूरोपीय किसानों का सम्बन्ध सीधे राजा से न होकर एक मध्यस्थ कुलीन उच्चवर्ग से होने लगा।[xi] सामंतवाद की आनुवंशिकता के विषय में इस समय के समाज विज्ञान विश्वकोष में बताया गया है कि ''यूरोपीय सामंतवाद एक ऐसी आर्थिक पद्धति है यद्यपि इस समय यूरोप में मुद्रा का चलन पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ था तथापि उसका प्रयोग बहुत कम होता था, इस समय यूरोप में धन के रूप में भूमि का प्रयोग किया जाता था। सामंती व्यवस्था का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धान्त आनुवंशिकता ही था।[xii]

संदर्भ ग्रंथ सूची–

---

[i] The Encyclopeadia Britanica, Vol. 14, p. 204

[ii] वही, भारतीय सामंतवाद, पृ. 1

[iii] मध्यकालीन भारत, भाग – 1, वही, पृ. 2

[iv] The Development of European Polity, Sidgwick, p. 202-206.

[v] मध्यकालीन भारत, वही, पृ. 4

[vi] An Outline History of World (Oxford), H.A. Davis, pp. 300-304

[vii] Each Feudal Prince had numerous vasals bound to help him with their advice or counsel and to aid him in case of war
A short History of Civilization, Hepry S. Lucas, p. 487

[viii] The System policy which prevailed in Europe in Middle class based upon the relations to oflord to vassal, with the holding of land in feud. The principla incidents of the Feudal system were homage, service of the tenants, wordship marriages, reliefs aids eschead and for faiture, New Collegiate Dictionary (London), Webster's, p. 301.

[ix] Although, the word feudalism in commonly used to designate a kind of society, which is characterized chiefly by personal relationship, subordinate one men to another and by progressive disuntigration of rights, of property in lands. It is better reserved for a system of law and private relationship, which in middle ages implied protection and maintenance on one side and service and obedience on other. Chamber's Encyclopaedia, Vol. V., p. 635

[x] कन्हैयालाल वर्मा, राजनीतिक विचारों का इतिहास ;प्राचीन और मध्यकालद्ध, पृ. 276.

[xi] A short history of civilisation, Henry S. Lucas, p. 378
[xii] Encyclopaedia of social science, vol. 5-6, pp. 204-207